संख्याक्रम की दृष्टि से स्थानांग का स्थान

अरबिन्द कुमार सिंह*
डॉ० नवल किशोर पाण्डेय*

आचार्य गुणधर[1] ने स्थानाङ्ग का परिचय प्रदान करते हुये लिखा है कि स्थानाङ्ग में संग्रहनय की दृष्टि से जीव की एकता का निरूपण है। तो व्यवहार नय की दृष्टि से उसकी भिन्नता का भी प्रतिपादन किया गया है। संग्रहनय की अपेक्षा चैतन्य गुण की दृष्टि से जीव एक है। व्यवहार नय की दृष्टि से प्रत्येक जीव अलग–अलग है। ज्ञान और दर्शन की दृष्टि से वह दो भागों में विभक्त है। इस तरह स्थानांङ्ग सूत्र में संख्या की दृष्टि से जीव, अजीव, प्रभृति द्रव्यों की स्थापना की गयी है। पर्याय की दृष्टि से एक तत्त्व अनन्त भागों में विभक्त होता है और द्रव्य की दृष्टि से वे अनन्त भाग एक तत्त्व में परिणत हो जाते हैं। इस प्रकार भेद और अभेद की दृष्टि से व्याख्या, स्थानाङ्ग में है।

स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग इन दोनों आगमों में विषय को प्रधानता न देकर संख्या की प्रधानता दी गई है। संख्या के आधार पर विषय का संकलन–आकलन किया गया है। एक विषय को दूसरे विषय के साथ इस सम्बन्ध की अन्वेषणा नहीं की जा सकती। जीव, पुद्गल, इतिहास, गणित, भूगोल, खगोल, दर्शन, आचार, मनोविज्ञान आदि शताधिक विषय बिना किसी क्रम के इसमें संकलित किये गये हैं। प्रत्येक विषय पर विस्तार से चिन्तन न कर संख्या की दृष्टि से आकलन किया गया है। प्रस्तुत आगम में अनेक–ऐतिहासिक सत्य–कथ्य रहे हुए हैं। यह एक प्रकार से कोश की शैली में आगम है, जो स्मरण करने की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी है।

जैन आगम साहित्य में तीन प्रकार के स्थविर बताये हैं। उनमें श्रुतस्थविर के लिए 'ठाण–समवायधरे' यह विशेषण आया है। इस विशेषण से यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत आगम का कितना अधिक महत्त्व रहा है।[2] आचार्य अभयदेव ने स्थानाङ्ग की वाचना कब लेनी चाहिये, इस सम्बन्ध में लिखा है कि दीक्षा–पर्याय की दृष्टि से आठवें वर्ष में स्थानाङ्ग की वाचना देनी चाहिए। यदि आठवें वर्ष से पहले कोई वाचना देता है तो उसे आज्ञा भंग आदि दोष लगते हैं।[3]

व्यवहारसूत्र के अनुसार स्थानाङ्ग और समवायांग के ज्ञाता को ही आचार्य, उपाध्याय और गणावच्छेदक पद देने का विधान है। इसलिये इस अंग का कितना गहरा महत्त्व रहा हुआ है, यह इस विधान से स्पष्ट है।[4]

समवायाङ्ग और नन्दीसूत्र में स्थानाङ्ग का परिचय दिया गया है। नन्दीसूत्र में स्थानाङ्ग की जो विषय–सूची आई है, वह समवायाङ्ग की अपेक्षा संक्षिप्त है। समवायाङ्ग अंग होने के कारण नन्दीसूत्र से बहुत प्राचीन है, समवायाङ्ग की अपेक्षा नन्दीसूत्र में विषय सूची संक्षिप्त क्यों हुई? यह आगम–मर्मज्ञो के लिये चिन्तनीय प्रश्न है।

***शोध छात्र, स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग वी० कुँ० सिं० वि०वि०,आरा (बिहार)**
***शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर प्राकृत विभाग पयहारी महाराज जी कॉलेज, आरा (बिहार)**

समवायाङ्ग के अनुसार स्थानाङ्ग की विषयसूची इस प्रकार है–

(1) स्वसिद्धान्त, परसिद्धान्त और स्व–पर–सिद्धान्त का वर्णन है।
(2) जीव, अजीव और जीवाजीव का कथन।
(3) लोक, अलोक और लोकालोक का कथन।
(4) द्रव्य के गुण, और विभिन्न क्षेत्रकालवर्ती पर्यायों का चिन्तन।
(5) पर्वत, पानी, समुद्र, देव, देवों के प्रकार, पुरुषों के विभिन्न प्रकार, स्वरूप गोत्र, नदियों, निधियों और ज्योतिषक देवों की विविध गतियों का वर्णन।
(6) एक प्रकार, दो प्रकार, यावत् दस प्रकार के लोक में रहने वाले जीवों और पुद्गलों का निरूपण किया गया है।

नन्दीसूत्र में स्थानाङ्ग की विषयसूची इस प्रकार है– प्रारम्भ में तीन नम्बर तक समवााङ्ग की तरह ही विषय का निरूपण है किन्तु व्युत्क्रम से है। चतुर्थ और पाँचवें नम्बर की सूची बहुत ही संक्षेप में है। जैसे टङ्क, कूट, शैल, शिखरी, प्राग्भार, गुफा आकार, द्रह और सरिताओं का कथन है। छट्ठे नम्बर में कहीं हुयी बात नन्दी में भी इसी प्रकार है।

समवायाङ्ग[5] और नन्दीसूत्र6 के अनुसार स्थानाङ्ग की वाचनाएं संख्येय है, उसमें संख्यात श्लोक है, संख्यात संग्रहणियाँ हैं। अंगसाहित्य में उसका तृतीय स्थान है। उसमें एक श्रुतस्कन्ध है, दश अध्ययन है। इक्कीस उद्देशनकाल है। बहत्तर हजार पद है। संख्यात अक्षर है यावत् जिन प्रज्ञप्त पदार्थों का वर्णन है।

स्थानाङ्ग में दश अध्ययन है। दश अध्ययनों का एक ही श्रुतस्कन्ध है। द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अध्ययन के चार–चार उद्देशक है। पंचम अध्ययन के तीन उद्देशक हैं। शेष छह अध्ययनों में एक–एक उद्देशक है। इस प्रकार इक्कीस उद्देशक हैं। समवायांग और नन्दीसूत्र के अनुसार स्थानाङ्ग की पदसंख्या बहत्तर हजार कही गई हे। आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित स्थानाङ्ग की सटीक प्रति में सात सौ तिरासी (783) सूत्र है। यह निश्चित है कि वर्तमान में उपलब्ध स्थानाङ्ग में बहत्तर हजार पद नहीं है। वर्तमान में प्रस्तुत सूत्र का पाठ 3770 श्लोक परिमाण है।

स्थानाङ्गसूत्र ऐसा विशिष्ट आगम है जिसमें चारों ही अनुयोगों का समावेश है। मुनि श्री कन्हैयालाल जी ''कमल'' ने लिखा है कि ''स्थानाङ्ग में द्रव्यानुयोग की दृष्टि से 426 सूत्र, चरणानुयोग की दृष्टि से 214 सूत्र, गणितानुयोग की दृष्टि से 109 सूत्र और धर्मकथानुयोग की दृष्टि से 51 सूत्र हैं। कुल 800 सूत्र हुये। जब कि मूल सूत्र 783 हैं। उन में कितने ही सूत्रों में एक–दूसरे अनुयोग से सम्बन्ध है। अतः अनुयोग–वर्गीकरण की दृष्टि से सूत्रों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है।''

संदर्भ ग्रन्थों की सूची :–

1. कसायपाहुड, भाग– 1, पृ. 113/64, 65
2. ववहार सूत्रा – 18, पृ. 175, मुनि कन्हैयालाल कमल
3. स्थानाग टीका, पृ. 26
4. ववहार सुत्रा – 3–3, सूत्रा – 68
5. समवायांग सुत्रा – 139, पृ. 123, मुनि कन्हैयालाल
6. नन्दीसूत्रा – 87, पृ. 36, पुण्य विजयजी

****